भाषा विज्ञान के अंग

भाषा विज्ञान भाषा का सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत करता है, अतः उसमें भाषा के सभी घटकों का अध्ययन होता है। भाषा शब्द के द्वारा उसके चार घटकों का मुख्य रूप से बोध होता है-१. ध्वनि(Sound), २. पद या शब्द(Form), ३. वाक्य(Sentence), ४.अर्थ(Meaning)। भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि है। उसका ही सर्वप्रथम उच्चारण होता है। अनेक ध्वनियों से मिलकर पद या शब्द बनता है। अनेक पदों से वाक्य की रचना होती है और वाक्य से अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। यह क्रम निरंतर चलता रहता है। इनमें से प्रत्येक के विशेष अध्ययन के कारण भाषा-विज्ञान के ४ प्रमुख अंग विकसित हो गए हैं। इनके नाम हैं-

१. ध्वनि विज्ञान(Phonology)

२. पद विज्ञान(Morphology)

३. वाक्य विज्ञान(Syntax)

४. अर्थ विज्ञान(Semantics)

१. ध्वनि विज्ञान – इसमें भाषा के मूल तत्त्व ध्वनि का व्यापक अध्ययन किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से इन विषयों का संकलन होता है- ध्वनि क्या है ? ध्वनियाँ कितनी हैं? इनका वर्गीकरण किस प्रकार किया जाता है ? ये ध्वनियाँ कैसे और कहां से उत्पन्न होती हैं? किस प्रकार ध्वनियों का संप्रेषण होता है ? ध्वनियों के भेद का क्या कारण है ? एकाधिक ध्वनियों के सहयोग से क्या परिवर्तन होते हैं ? ध्वनियों में तीव्रता और मंदता क्यों आती है? ध्वनि-नियम क्या है ? स्वनिम, स्वनिमी आदि का निरूपण करना।

२. पद विज्ञान – अनेक ध्वनियों के समन्वय से पद या शब्द बनता है। पद-विज्ञान को रूप-विज्ञान और रूप-विचार पद विचार भी कहा जा सकता है। इसमें पद या रूप क्या

है ? पद कैसे बनता है ? पद के घटक अवयव क्या हैं ? पदों का विभाजन किस आधार पर होता है ? लिंग, विभक्ति, वचन, पुरुष, काल, प्रकृति, प्रत्यय, उपसर्ग आदि तत्त्व क्या हैं ? इनकी क्या उपयोगिता है ? शब्द और पद में क्या अंतर होता है ? पद-निर्माण कितने प्रकार का होता है ? इत्यादि विषयों का पद-विज्ञान में विवेचन किया जाता है ।

३. वाक्य विज्ञान - जिस प्रकार विभिन्न ध्वनियों के समन्वय से पद या रूप बनता है, उसी प्रकार विभिन्न पदों या रूपों के समन्वय से वाक्य बनता है । वाक्य विज्ञान में वाक्य की रचना किस प्रकार होती है ? वाक्य में पदों का अन्वय किस प्रकार होता है ? अन्वय का आधार क्या है ? कर्ता, क्रिया, कर्म आदि का किस स्थान पर निवेश होता है ? वाक्य के कितने भेद हैं ? इत्यादि बातों का विवेचन किया जाता है । वाक्य विज्ञान को वाक्य-विचार, वाक्य-रचना शास्त्र भी कहा जाता है । वाक्य विज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया गया है- **वर्णनात्मक वाक्य-विज्ञान**(वाक्य की रचना का सामान्य विवरण)**, ऐतिहासिक वाक्य-विज्ञान**(वाक्य की रचना का इतिहास)**, तुलनात्मक वाक्य-विज्ञान**(दो या अनेक भाषाओं के वाक्यों का तुलनात्मक अध्ययन) ।

४. अर्थ विज्ञान - जिस प्रकार मानव शरीर का सार भाग 'आत्मा' है, उसी प्रकार भाषारूपी शरीर की आत्मा अर्थ है । अर्थ-विज्ञान को अर्थ-विचार भी कहते हैं । इसमें अर्थ किसे कहते हैं ? शब्द और अर्थ का क्या संबंध है ? अर्थ का निर्धारण कैसे हुआ ? अर्थ-परिवर्तन क्यों और कैसे होता है ? अर्थ-परिवर्तन की क्या दिशाएँ हैं ? अर्थ-परिवर्तन के क्या कारण है ?

भाषा विज्ञान के कुछ गौण अंग भी हैं । भाषा की उत्पत्ति, भाषाओं का वर्गीकरण, कोश-विज्ञान, लिपि-विज्ञान, भाषिक-भूगोल, प्रागैतिहासिक खोज, शैली-विज्ञान, भू-भाषा-विज्ञान, समाज-भाषा-विज्ञान, मनोभाषा-विज्ञान, भाषा-विज्ञान के इतिहास का अध्ययन, बोली-विज्ञान, सुर-विज्ञान, भाषा-विकास, भाषा-प्रकार-विज्ञान, भाषिक पुनर्निर्माण इत्यादि ।